



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 90] नई दिल्ली, सोमवार, फरवरी 19, 1990/माघ 30, 1911
No. 90] NEW DELHI, MONDAY, FEBRUARY 19, 1990/MAGHA 30, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय
(प्राथमिक कार्य विभाग)
(बैंकिंग प्रभाग)
अधिनियम

नई दिल्ली, 19 फरवरी, 1990

का.भा. 150(अ).—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधि-
नियम, 1949 (1949 का 10), की धारा 45 की उपधारा (7) के
अनुसरण में बैंक आफ थंजावूर लिमिटेड, थंजावूर के इण्डियन बैंक
के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में जो उक्त उपधारा के अधीन
केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी, 1990 को विहित
तारीख के रूप में विनिश्चित करती है।

[संख्या 17/5/89-सं.ओ.-III(7)]

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)
NOTIFICATIONS

New Delhi, the 19th February, 1990

S.O. 150(E).—In pursuance of sub-section (7) of
section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10
of 1949), the Central Government hereby specifies
the 20th February, 1990 as the prescribed date in

relation to the scheme for the amalgamation of the
Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with Indian
Bank which has been sanctioned by the Central
Government under the provisions of the said sub-
section.

[No. 17/5/89-B.O. III(a)]

का.भा. 151(अ).—केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन अधि-
नियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के
अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आवेदन पर, उक्त धारा
की उपधारा (2) के अधीन बैंक आफ थंजावूर लिमिटेड, थंजावूर के
संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिसूचना आवेदन
किया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की
उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इण्डियन
बैंक के साथ बैंक आफ थंजावूर लिमिटेड, थंजावूर के समामेलन की
स्कीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबन्धों के
अनुसार उक्त स्कीम का प्राथम संबंधित बैंकों को सेजने के पश्चात्
और उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार
करने के पश्चात् वह स्कीम उद्घाटित की है और इसे मंजूर के निम्न
केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

अब धन: केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें प्राप्ति निबंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए इस स्कीम को मंजूरी दी है।

1. बैंक आफ पञ्जाब लिमिटेड, पंजाब अंतरक बैंक होगा और इण्डियन बैंक अंतरिती बैंक होगा।

2. ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करें (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अंतरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियाँ, भाग, बाँचे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, आस्तियाँ और जंगम और स्थावर सम्पत्ति जिसके अन्तर्गत भू-सूक्ति के सभी आपत्तियों या पट्टों या करारों द्वारा आरक्षित और उनमें अंतर्निष्ठ/भाटकों और अन्य धनराशियाँ और प्रसंगविधाओं के अधीन परिवार, जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्नीचर, नियोजित उपकरण, संयंत्र, यंत्र और ताजिल, बहरी, कागज-पत्र लेखन सामग्री स्टॉक, धन्य स्टॉक और सामान, सभी स्टॉक विनिधान सेयर और प्रतिभूतियाँ, हाथ में और अधिवहन में प्राप्त सभी ढुंधियाँ, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गत भाग पर या संश्लिष्ट न्यूनता पर धन भी है), बचिवन, सभी बहरी ऋण, बंधक, ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित धन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभूति अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी धन्य, यदि कोई हों, सम्पत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के आस्ति संबंधी फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतरिती बैंक को अंतरित हो जाएँगे और उसकी सम्पत्ति और आस्तियाँ बन जाएँगे और विहित तारीख से ही अंतरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति में अंतरिती बैंक के दायित्व, कर्तव्य और बाध्यताएँ होंगे और बन जाएँगे।

पूर्वगामी उपबंधों की व्यापकता प प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविधान विनियम, संघात, करार, मुक्तारामें, विधि प्रतिनिधित्व की संवरियों और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले आस्तियशील या प्रभावशील हों, अंतरिती बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशील होंगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मानो अंतरक बैंक के स्थान पर अंतरिती बैंक उनमें पत्रकार रखा हो, मानो अंतरिती बैंक के पक्ष में जारी की गयी हों।

यदि विहित तारीख को अंतरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई बाध, अधीन या किसी भी प्रवृत्ति की कोई धन्य विधिक कार्रवाई लंबित है तो उसका उपशमन नहीं होगा वह संघ नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सकेगी और प्रवृत्ति की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबंध उस देश में स्थित, किसी ऐसी आस्ति या दायित्व को जो अंतरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अंतरिती बैंक को अंतरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी आस्ति या दायित्व के संबंध में अंतरक बैंक का कार्यकलाप विहित तारीख से अंतरिती बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में व्यक्त हो जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रभावी रूप के इसके कार्यकलाप के परिसर, पत्र के योजन के लिए अंतरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अंतरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियाँ करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अनेकित हों और उन संबंध में मुख्य कार्यपालक

अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा नियुक्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अंतरक बैंक की आस्तियाँ वसूल कर सकेगा या उनके दायित्व का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध आगमों का अंतरिती बैंक को अंतरित कर देगा।

3. अंतरक बैंक की बहियाँ बंद की जाएँगी और उनकी तुलना की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जाएगा और तुलन-पत्र चार्टर्ड लेखाकार तथा चार्टर्ड लेखाकारों की किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट की गयी हो सन्तुष्ट और प्रमाणित कराए जाएँगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गयी अंतरक बैंक के तुलन-पत्र की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव शीघ्र कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अंतरक बैंक से तुलन-पत्र या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियाँ कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन बुलाने की प्रपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अंतरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उस अधिनियम की धारा 285 की प्रपेक्षानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1-अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार अंतरक बैंक की सम्पत्तियों और आस्तियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, धर्मात्:—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार बरों पर किया जाएगा।

(ख) (1) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी अधिसूचना में अधिकृत मिट्टियों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जायेगा।

(2) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे ड.क.पर-प्रभाव पत्र, ट्रेजरी बचत निक्षेप प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार की लघु बचत योजना के अधीन जारी की गयी कोई धन्य प्रतिभूतियाँ या प्रमाण पत्रों को मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को तक प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया जायेगा।

(3) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी उन्मूलन बंध-पत्र या धन्य सामान प्रतिभूति जिसकी बाबत मूल किस्तों में बेय है, का बाजार मूल्य प्रतिनिश्चित नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है या वह धन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उतनी कम पर किया जायेगा जो संभव किए जाने वाले नक़्काया मूल और उसकी ध्याज की किस्तों को उस कालावधि की जिसके दौरान ऐसी किस्तें संवेय हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिपक्वता है या वह समुपगत बातों को ध्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर डिबेंचर वंश-पत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके अमान्य बातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं जाना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके असत बाजार मूल्य के आधार पर किया जायेगा।

(घ) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर या डिबेंचर या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य अभिविधित नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले समुदाय की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संदत्त लाभों और अन्य सुसंगत बातों का ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।

(ङ) बाबों की तृप्ति के लिए अर्जित परिवारों और अन्य सभी जन्म सम्पत्तियों और किन्हीं आस्तियों का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जायेगा।

(च) फर्निचर और पिकसबल, स्टॉक की लेखन सामग्री और अन्य आस्तियाँ, यदि कोई हों का मूल्यांकन प्रति वर्षीय अधिकृत मूल्य के आधार पर या वसूली योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जायेगा।

(छ) अग्रिमों, जिनके अन्तर्गत कर की गयी और मिनिकाटे पर भुगतान की गयी छुट्टियाँ भी हैं, बड़ी श्रृणों और विधि आस्तियों की समीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियों जिनके अन्तर्गत उनके आधार के रूप में अर्जित प्रतिभूतियाँ भी हैं अंतरिती बैंक द्वारा परेजिन और सत्यापित हो जायगी। तत्पश्चात् अग्रिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाएंगे अर्थात् "बे अग्रिम जिन्हें अस्था और आसानी से वसूली योग्य माना गया है" और "बे अग्रिम, जिन्हें आसानी से वसूली योग्य नहीं माना गया है" और या जिनकी वसूली डूबत या शंकास्पद है।

(1) इस स्कीम प्रयोजनों के लिए दायित्वों के अन्तर्गत ऐसी सभी समाश्रित दायित्व भी हैं, जिसके लिए अंतरिती बैंक से विहित तारीख को या उनके पश्चात् प्राप्त स्वयं के बाबों से उचित रूप से पूर्ति करने का आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

(2) जहाँ किसी आस्तिक का मूल्यांकन विहित तारीख को आधारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, बागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्कर्तव्य तारीख को वसूली योग्य आस्ति के रूप में जाना जायेगा। किसी आस्ति के मूल्यांकन और या किसी अग्रिम के वर्गीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की वास्तव अंतरिती बैंक और अन्तरिक बैंक के बीच कोई असहमति है, तो यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्टित किया जायेगा जिसकी राय अंतिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अंतरिती बैंक द्वारा सदा या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तिम रूप से अपनाया जायेगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की वशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो यह आस्ति की ऐसी किसी सब के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी मद के अवधारण के संबंध में अनुचित नवने, और ऐसी राय अग्रिम प्राप्त करने का व्यव अन्तरिक बैंक को प्राप्ति में पूर्ण रूप से देव होगा।

पूर्वगामी उपबन्धों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और उसके सदस्यों और नेत्रारों पर आबद्ध कर होगा।

5. अन्तरिक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अंतरिती बैंक की अन्तर होने के प्रतिफल स्वरूप अंतरिती बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विस्तार तक अंतरिक बैंक के दायित्वों का निर्वाहन करेगा, अर्थात्:—

(क) विहित तारीख तक कर्मचारीवृद्ध प्रतिभूति निक्षेप; सहित उस पर प्रतिभूत ध्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अंत तक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गयी कोई धनराशि और विहित तारीख को मनी अन्य बाह्य दायित्व, जिनके अन्तर्गत निक्षेप नहीं हैं, संवत् किए जाएंगे या उसकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षेप पर देव ध्याज संबद्ध निक्षेप का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्येक बचत बैंक खाते या जमा खाते या किसी अन्य निक्षेप की बाबत जिनके अन्तर्गत साक्षि निक्षेप, सकल प्रमाण-पत्र, मासिक निक्षेप, मांग या संक्षिप्त सूचना पर देव निक्षेप या अन्तरिक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप बाड़े व किसी भी नाम से आने वाले हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अन्तर्गत देव मोमा तक ध्याज भी है। अंतरिती बैंक विहित तारीख को संबंधित धारक/कों के नाम में एक सस्मान और बैसा हो खाना खोलेगा जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट तथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपबन्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से बे अग्रिम जो आसानी से वसूली योग्य नहीं माने गए हैं, या डूबत हैं या जिसकी वसूली शंकास्पद है, कोई अन्य आस्तियाँ या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रकम जो उप खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपबन्धों के लिए अर्पित हैं, अर्पित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरिक बैंक को जारी किए गए तारीख 19 अगस्त, 1989 के अधिसूचना आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क)(1) के आधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उपाय के अर्पित जमा की जाने वाली रकम के मदों की जाएगी और तदनुसार जमा की जाने वाली कम आनुपातिक शेयर होगी जिसमें ऐसा संदाय की रकम कम कर दी जाएगी।

परन्तु यह और कि जहाँ अंतरिती बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रतिभूतियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेय है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उक्त लेख में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर सकेगा जब कि अन्तरिती बैंक खाते में सही प्रतिभूत अग्रिमविधित नहीं कर लेता है।

स्पष्टीकरण

"आनुपातिक" पद से, जहाँ तक यह उक्त पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अग्रिम है जो 19 अगस्त, 1989 का

कारोबार की समाप्ति पर बकाया संदेय है (विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय ब्याज सहित) और जहाँ तक वह इस स्कीम में अन्यत्र जाता है, एसी संबंधित स्कमों के अनुपालन में अभिप्रेत है जो संदाय या वितरण के समय बकाया देय है।

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट जमा अंतराणि किए जाने के के पश्चात् अंतरिनी बैंक संभवतः कम से कम विवक्षित से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक पूर्ण देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अंतरिनी बैंक उस तारीख या तारीख से जिसकी रकम प्राप्त होती है, सात दिन के अंदर उस खाते में देय अंतराणि के बिना तब तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु:—

(1) यदि खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कोई खाता बंद कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जहाँ उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होनी है, परित्यक्त हो गया है तो उस रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अंतरिनी बैंक द्वारा तब तक रूप से किया जायेगा।

(2) यदि खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट किसी कम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसानी से पता नहीं जान पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका पूषक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अंतरिनी बैंक को किसी रकम का संदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के अंतरिनी बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति को वास्तव संदाय करने का विनियमन नहीं कर दिया है।

(3) विहित तारीख को अंतरिनी बैंक की समादन पूर्ण सम्पूर्ण रकम और आरक्षित को ड्यूटी और ग्रांटाइड ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जायेगा और अंतरक बैंक की अन्य आस्तियों में अवशेष और अंतरक बैंक के सदस्यों के अधिकार अंतरिनी बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबन्धित हैं।

6. निम्नलिखित की बाबत:—

(क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेख की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख, यदि कोई है, में जमा न किया गया प्रतिलिख और

(ख) अंतरक बैंक में प्रत्येक शेयर का बाबत जिसकी रकम का विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूंजी के मुद्दे समावृत्त रूप में माना गया था या लेख (1) के अनुसरण में अंतरिनी बैंक द्वारा की गयी मांग के मुद्दे रकम संदत्त का ब्याज की, संग्रहण लेख के रूप में माना जाएगा और उसे अंतरिनी बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विवरण संदाय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात्:—

(1) (क) अंतरिनी बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक में आश्रित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत

था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अंदर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाएं, ऐसे शेयर या शेयरों और बकाया मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा अंतर्दत्त रह रही अंतर्दत्त रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्पश्चात् यदि यह आवश्यक पड़ा जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक के साधारण शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अंदर ऐसे शेयर या शेयरों या बकाया मांगों यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा अंतर्दत्त रह रही अंतर्दत्त रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।

(ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिगत की कालाधिक के लिए छः प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित खंड (क) के अधीन देय रकम के संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेगा।

(2) अंतरिनी बैंक, अधियों, कप या मितिकाटा किए गए भुगतान, ऋणियों, यहाँ ऋणों और विविध ऋणों तथा अन्य प्रस्तियों की बाबत जो "ऐसे अधियों के रूप में जो आम ना से वसूली योग्य नहीं है और या वसूली के लिए दुरुस्त या शक्य है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है: या जो उपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः वसूली योग्य है या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और किसी ऋण या अर्द्धि की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो अंतरिनी बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना:—

(क) ऋण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहारा नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बड़े खाते में नहीं डालेगा।

(ख) उसे अंतरिनी बैंक की प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा की गयी किसी आस्ति का विक्रय या अन्यथा व्यय नहीं करेगा।

(3) इसके अतिरिक्त, अंतरिनी बैंक बैंकरो विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45A के साथ और कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंकरो विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45B के अधीन अंतरिनी बैंक के किसी संयोजक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसान के रूप में अधिनियमित की गयी रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियाँ करेगा।

(4) अंतरिनी बैंक, उपर्युक्त खंड (1), (2) और (3) में उल्लिखित मर्कों के कारण अपने द्वारा की गयी वसूलियों में से किसी समावृत्त दावित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे दावित्व, चाहे वह समावृत्त हो या अस्थायिक, की बाबत जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निर्बंधनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख की या उसके पश्चात् उपभूत हुआ है या जिसका पता चला है, संदाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 45A के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अध्यापित हो उपबन्ध कर सकेगा।

(5) अंतरिनी बैंक, उपर्युक्त खंड (1), (2) और (3) में उल्लिखित मर्कों के कारण अपने द्वारा की गयी वसूलियों में से, उस प्रयो-जनों के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के

अनुमोदन से ऐसे अन्य व्यर्थों की जो उचित समझा जाए, उनमें से कटौती करने और उपर्युक्त खंड (4) के निबंधनों के अनुसार उसमें से रकम विनिर्दिष्ट करने के पश्चात् या ऐसे प्रतिशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्वों की सीमा अंतिम रूप से अभिनिर्दिष्ट की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाश्रित दायित्वों की बाबत आवंध में से उपलब्ध हो।

(क) निक्षेप बीमा और प्रत्यय ग रंटी अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अंतरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबंधित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संग्रहण खाते की बाबत शोध्य रकमों का, और ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपबंधित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित संदाय की बाबत निगम को उक्त खाते में शोध्य रकमों को उपर्युक्त खंड (क) के उपबंधों के अनुसार पहले संवस किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण खाते में उन्हे शोध्य अधिनियम यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अंतरिती बैंक का बहिर्धों में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा और प्रत्यय ग रंटी निगम साधारण धिनियम, 1961 के धिनियम 22 खंड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संवस की जाएगी। परन्तु यह और कि अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उग दशा में करेगा :—

(1) यदि पैरा (5) के खंड (ख) में उल्लिखित तत्समान या समरूप खाते को बंद नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है, और

(2) यदि उक्त खाते को बंद कर दिया गया है या वह नकद भुगतान के लिए परिपक्व हो गया है।

(6) उपर्युक्त खंड (5) के उपखंड (क) के निबंधनों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों, और उस खंड के उपखंड (ख) के निबंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी अपस में समान होगी, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान अनुपात में कमी होगी।

(7) इस पैरा के खंड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबंधित किए जाने के पश्चात्, अंतरिती बैंक, खंड (5) में निर्दिष्ट रकमों के उस प्रतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अंतरक बैंक के भूतपूर्व शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, आनुपातिक संदाय करेगा ;

(क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व अधिमान शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

(ख) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो और उसके पश्चात्।

(ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व अस्थायित शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

(घ) उपर्युक्त उपखंड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः संवस करने के पश्चात् अंतरिती बैंक के पास बाकी बचे अधिनियम का अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा :

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखंड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय प्रतिम होगा।

(8) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अंतरिती बैंक का बाधित उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है।

(9) बिना तारोख या ऐसा पूर्वोक्त अवधि से, जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात्, इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे बारह वर्ष के अवधान पर, इस पैरा के खंड (2) में निर्दिष्ट किसी ऐसी मद का, जो उस तारोख तक बसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन अंतरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अंतरिती बैंक, उक्त मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खंड (4) में निर्दिष्ट दायित्वों को पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि का जो उपर्युक्त खंड (5), (6) और (7) में उपबंधित क्रम और रीति ने उस तारोख तक बूझाया जाने से रह गया हो, पछुं उन में से कटौती करके वितरित करेगा।

(10) अंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती (1), (2) और (3) में उल्लिखित मवों के कारण बसूल किए गए ऐसे धन को, जिनको तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा के लिए जाने को संभावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास ब्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निवेश वे, विनिश्चित करेगा। प्राबुधत ब्याज को खंड (4), (5), (6) और (7) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपबंधित रीति से उपयोजित किया जाएगा।

7 किसी अभिव्यक्त या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, पैरा (5) में निबंधनों के अनुसार अंतरिती बैंक के पास खोले गए।

नए खाते की बाबत ब्याज का संदाय किया जाएगा और उसके केवल उस या अगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी वरों पर, जो अंतरिती बैंक अनुज्ञात करे जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निक्षेपकर्ता या अंतरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अंतरिती या अंतरक बैंक के विभाज किसी ऐसी बात के लिए कोई कदम या अन्य विधिक कार्य-वाहिया नहीं होंगी जो इस स्कीम के अनुसरण में सदभावपूर्वक की गयी है या की जाने के लिए प्राथमिक है।

10. अंतरक बैंक के सभा कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिता बैंक द्वारा उसी परिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 19 अगस्त, 1989 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसी कर्मचारियों को लागू थी।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अंतरक बैंक या अंतरिता बैंक को, उस तारीख के जिसको यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अंतरिता बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है यद्यपि: बिना अधिनियम, 1947 के उपबंधों के अधीन ऐसे, प्रतिकर, यदि कोई हो, और ऐसे पेंशन, उपदान अथवा निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के लिये हकदार होंगे, जो 19 अगस्त, के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हों।

परन्तु यह और कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों की बातें जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अंतरिता बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अंतरिता बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरिता बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छुट्टियों की दशा में इस आधार पर छुट्टी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर रही है और अंतरिता बैंक में उनके स्थानांतरण से विच्छिन्न नहीं हुई है।

11. अंतरिता बैंक, उस तारीख से जिसको इस स्कीम का मंजूर किया जाना है, तीन वर्ष से अन्तर्गत अवधि के अवसान पर, अंतरक बैंक के कर्मचारियों को वही परिश्रमिक और सेवा के वही निबंधन और शर्तें संदाय या मंजूर करेगा जो अंतरिता बैंक के तत्समान रैंक या प्रस्थिति के कर्मचारियों को, अंतरिता बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अंतरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अर्हताएं और अनुभव के अधीन रहते हुए लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी को अर्हताएं या अनुभव अंतरिता बैंक के तत्समान रैंक या प्रस्थिति के अन्य कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव के समान या समतुल्य है या नहीं या वह अंतरिता बैंक के वर्तमान में कर्मचारियों का वेतन नियत करने के लिए अपनए जाने वाले निष्ठास्वी की प्रक्रिया के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा जिसका विनिश्चय अन्तिम होगा।

12. यथास्थिति, अंतरक बैंक या अंतरिता बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी अथवा निधि और/या उपदान निधि के न्यासी या प्रणामक, बिहित तारीख को या उसके पश्चात् यथा संभव सीधे अंतरिता बैंक के लिए गठित कर्मचारी अथवा निधि और/या उपदान निधि के न्यासी को, या अथवा, जैसा अंतरिता बैंक निवेश दे, अंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए ध्यास में धारित सब धन और विनिधान अंतरित कर देगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्तत्तरी न्यासी विनिधानों के मूल्य में किसी कमी के लिए या बिहित तारीख के पहले किए गए किसी कार्य, उपेक्षा, या व्यक्तिक्रम की बाधत यायी नहीं होंगे।

13. अंतरिता बैंक ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

14. अंतरिता बैंक, अंतरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे ऋण में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक

इस निमित्त विनिदिष्ट करे, अंतरक बैंक के शेषधारकों की भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोक जायेगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

15. किसी ऐसी सूचना या अन्य सूचना के बारे में जिसकी अंतरिता बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक रूप से दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रेशन पते पर, जब तक कि कोई नया पता अंतरिता बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रेशन नहीं, प्रेषित की सम्मोदित किया गया है और उसे पूर्व-संदर्भ सामान्य डाक से भेजा गया है और ऐसी सूचना उसे डाक में डाले जाने के पश्चात्/अज्ञातम घण्टे के अवसान पर तामील की गया समझा जाएगा। इसके अतिरिक्त किसी ऐसी सूचना या सूचना को जो सार्वजनिक हित की हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में जनता परिचालन ऐसे स्थान पर हो जहाँ बैंक अपने कारबार का संव्यवहार कर रहा था या, बिनापित किया जाएगा।

16. यदि इस स्कीम के किता उपबंध या निर्वचन करते समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले की सार्वजनिक रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निश्चयायक होगी और अंतरिता बैंक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभा सदस्यों, निक्षेपकर्ताओं और अन्य दारों तथा कार्यचारियों पर भी और और किसी अन्य व्यक्ति पर, जिसका इन बैंक में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दायित्व है, आकर होगी।

17. यदि इस स्कीम के उ उपबंधों का प्रभाव करने में कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अंतरक और अंतरिता बैंकों को या उनमें से किसी को ऐसे निवेश आ इस स्कीम से घसगत न हो, आरा कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिये आवश्यक या उपयुक्त प्रस्ताव हो।

[सं. 17/5/89--बी ओ III(ब)]

S.O. 151(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said Section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, under sub-section (2) of the said section,

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with the Indian Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur shall be the transferor bank and the Indian Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationary, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the

laws of any such country **outside India** for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August, 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

(4) (I) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,

- (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
- (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the Security shall be valued at such

an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

(II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

(III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation

of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,

- (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION :

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

- (b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advance considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a)(i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-1989 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this subparagraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION :

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amount remaining due at the time of the payment or distribution'.

- (c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act :

Provided that—

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to

pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

- (d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below :—

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

(b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances

of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

- (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
- (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clause (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5)(a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;

(v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made

or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned is clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

- (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter
- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferor bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government; intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall

be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily, admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure or principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at

such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places, where the transferor bank was transacting its business.

(16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any right or liability in relation to any of these banks.

(17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17/5/89-B.O. III(b)]

क्र.आ. 152(अ) :—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10), की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में परर सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परर के बैंक आफ इंडिया के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के अधीन केन्द्रीय सरकार, द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी 1990 को विहित तारीख के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

[सं. 17/7/बी.ओ.-111(i)(क)]

S.O. 152(E).—In pursuance of sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17/7/89-B.O. III(i)(a)]

क्र.आ. 153(अ) :—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आदेशन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन परर व सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परर

के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिसूचना आदेश किया है।

श्रीर भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बैंक आफ इंडिया के साथ परर सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परर के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

श्रीर रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबन्धों के अनुसार उक्त स्कीम का प्राथम संबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात् श्रीर उक्त स्कीम को वाचन प्राप्त सुधारों और आक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् वह स्कीम अमान्यित की है और इसे मंजूर के बिना केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

अब अतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें प्रागे धर्णित निबंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए इस स्कीम को मंजूरी दे दी है।

(1) परर सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परर अन्तरक बैंक होगा और बैंक आफ इंडिया अन्तरिती बैंक होगा।

(2) ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिये विनिर्दिष्ट करे (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अन्तरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियां मांग, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, नाम, आस्तियां और जंगम और स्थावर सम्पत्ति जिसके अन्तर्गत संपत्ति के सभी आपतनों या पट्टों या करारों द्वारा आरक्षित और उनमें अन्तर्बिष्ट/भाटकों और अन्य धनराशियों और प्रसंगविषयों के अधीन परिसर जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्नीचर, विभोजित उपकरण, संयंत्र, यंत्र और साधन, बर्तन, कारगज-पत्र लेखन सामग्री स्टॉक, अन्य स्टॉक और गामान, सभी स्टॉक विनिधान फ्लैवर और प्रतिभूतियां, हाथ में और अधिवहन में प्राप्य सभी हुंडियां, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गत मार्ग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), बुलियन, सभी बही ऋण, बंधक, ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभूति अन्तरक बैंक के आरवार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों, सम्पत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के आस्तिस संबंधों फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक को अन्तरित हो जाएंगे और उसकी सम्पत्ति और आस्तियां बन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके उपबन्धित विस्तार तक और रीति में अन्तरिती बैंक के दायित्व, कर्तव्य और बाध्यताएं होंगी और बन जाएंगे।

पूर्वगामी उपबन्धों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविधान विरोध, बंधन, करार, मुश्किलता में, विधि प्रतिनिधित्व की मंजूरीयों और किसी भी प्रकृति की अन्य निषेधों जो विहित तारीख के एक पहले आस्तिसशाली या प्रभावशाली हों, अन्तरिती बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें उपबन्धित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी और ऐसे ही कार्यास्थित को जो सकेगी मानो-अन्तरक बैंक के अमान पर अन्तरिती बैंक उगमें पक्ष कर रहा हो, मानो वे अन्तरिती बैंक के पक्ष में जारी की गयी हों।

यदि विहित तारीख को अन्तरक बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई वाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति को कोई अन्य विधिक कार्यवाही संबंधित है तो उसका उपशमन नहीं होगा वह बंध नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा सकेगी और प्रभावित की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबन्ध उस देश में स्थित किसी ऐसी प्राप्ति या वास्तव्य को जो अन्तर-रक बैंक के उपक्रम के भाग है, अन्तरिती बैंक को अन्तरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी प्राप्ति या वास्तव्य के संबंध में अन्तरक बैंक का कार्य कताप विहित तारीख में अन्तरिती बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में स्पष्ट हो जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रभावी रूप से इसके कार्यकलाप के परिसमापन के प्रयोजन के लिए अन्तरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अन्तरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियां करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की प्राप्ति या बसूल कर सकेगा या उसके वास्तव्य का निर्बहन करेगा और उसके शुद्ध भागों का अन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अन्तरक बैंक की बहियां बढ़ की जाएंगी और उनकी तुलना की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा और तुलन-पत्र चार्टर्ड लेखाकार तथा चार्टर्ड लेखाकारों को किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट की गयी हो गपरी-भित और प्रमाणित कराए जाएंगे।

पूर्वगामी 1984 के उपबन्धों के अनुसार तैयार की गयी अन्तरक बैंक के तुलन-पत्र की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव शीघ्र कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक से तुलन-पत्र या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियां कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबन्धों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन बुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उस अधिनियम की धारा 285 की अपेक्षानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4. 1. अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबन्धों के अनुसार अन्तरक बैंक की सम्पत्तियों और प्राप्तिओं का मूल्यांकन करेगा और वास्तव्यों की सगणना करेगा, अर्थात्:—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों से निम्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार करों पर किया जाएगा।

(ख) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी अधिसूचना में अधिकृत शिखरों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जायेगा।

(ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाकघर-प्रमाण पत्र, ट्रेजरी बंधन विशेष प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार को लघु बचत योजना के अधीन जारी की गयी कोई अन्य प्रतिभूतियां या प्रमाण पत्रों की मूल्यांकन उनके अधिकतम मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को नकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया जायेगा।

(iii) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी अनुमूलन पत्र-पत्र या अन्य सामान प्रतिभूति जिसकी बाबत मूल्य किस्तों में देय है, का बाजार मूल्य निर्दिष्ट नहीं

किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि वह उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है या वह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उसी रकम पर किया जायेगा जो संवत् किए जाने वाले बकाया मूल और उनकी धाज की किस्तों को उक्त कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तें संदेय हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किता प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैधता हो या लगभग वैध हो परिगणना है या वह अनुमानित बाजारों की धाज में रखी हुई व्यक्तिगत समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर डिबेंचर बंध-पत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके प्रसामान्य बाजारों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्त नहीं जाना जाता है, वहाँ विनिधान का मूल्यांकन किसी व्यक्तिगत कालावधि के दौरान उसके औसत बाजार मूल्य के आधार पर किया जायेगा।

(घ) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर या डिबेंचर या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य अभिविधित नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले समुदाय को किसी स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उनके द्वारा संवत् लाभों और अन्य समुदाय बातों की ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो व्यक्तिगत मूल्य माना जायेगा।

(ङ) वार्षिक की तुष्टि के लिए प्रतिष्ठित परिसरों और अन्य सभी जगह सम्पत्तियों और किन्हीं प्राप्तिओं का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जायेगा।

(च) फर्नीचर और पिक्चर, स्टॉक को लेखन सामग्री और अन्य प्राप्ति, यदि कोई हों या मूल्यांकन प्रति वही अधिकतम मूल्य के आधार पर या बसुला योग्य के आधार पर, जो भी व्यक्तिगत समझा जाए, किया जायेगा।

(छ) अधिमों, जिनके अन्तर्गत का की गयी और निम्नलिखित पर अनुमान की गयी हुई बातें भी हैं, वहाँ धाजों और विधि प्राप्तिओं की समीक्षा अन्तरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियां जिनके अन्तर्गत उसके अवश्य के रूप में धारित प्रतिभूतियां भी हैं, अन्तरिती बैंक द्वारा परीक्षित और सत्यापित हो जाएगी। तत्पश्चात् अधिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो अधिमों में वर्गीकृत किए जाएंगे, अर्थात् "वे अधिम जिन्हें अच्छा और आसान से बसुली योग्य माना गया है और" "वे अधिम, जिन्हें आसान से बसुली योग्य नहीं माना गया है" और/या जिनकी बसुला कृपत या शंकास्पद है।

(i) इस स्कीम प्रयोजनों के लिए वास्तव्यों के अन्तर्गत ऐसी सभी समाहित वास्तव्य भी हैं, जिनके लिए अन्तरिती बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के खर्चों से उचित रूप से पूति करने की आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

(ii) जहाँ किसी प्राप्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को आधारित नहीं किया जा सकता है, वहाँ यह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्पूर्वी तारीख को बसुली योग्य प्राप्ति के रूप में जाना जायेगा। किसी प्राप्ति के मूल्यांकन और/या किसी अधिम के वर्गीकरण और/या किसी वास्तव्य के अवधारण की बाबत अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक के बीच असहमति है, तो यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसकी राय अंतिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तरिती बैंक द्वारा मर्दां या उसके भाग का

मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अल्पनिम्न रूप से अपनाया जायेगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो यह आश्वस्त की ऐसी किसी किसी मध्य के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी मध्य के अवधारण के संबंध में समुचित समझे, और ऐसा राय अभिप्राय करने का व्यव्य अन्तरक बैंक की आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा। पूर्वगामी उपबन्धों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और सदस्यों और लेनदारों पर आबद्ध कर होगा।

5. अन्तरक बैंक की संपत्ति और आस्तियों के अन्तरिती बैंक को अन्तरण होने के प्रतिकूल स्वरूप अन्तरिती बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विस्तार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निर्वाहन करेगा, अर्थात्:—

(क) विहित तारीख तक कर्नबारीबन्ध प्रतिभूति निक्षेपों सहित उस पर प्रोचभूत ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्नबारी द्वारा जमा की गयी कोई धनराशि और विहित तारीख को सभी अन्य बाध्य दायित्व, जिसके अन्तर्गत निक्षेप नहीं हैं, संदत्त किए जाएंगे या उनकी पूर्ण अवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण:—इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षेप पर देय ब्याज संबद्ध निक्षेप का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्येक बचत बैंक खाते या जालू खाते या किसी अन्य निक्षेप की बाधत जिनके अन्तर्गत सावधि निक्षेप, नकद प्रमाणपत्र, भासिक निक्षेप, मांग या संक्षिप्त सूचना पर देय निक्षेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप बाहे के किसी भी नाम से जाने जाते हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देय सीमा तक ब्याज भी है। अन्तरिती बैंक विहित तारीख को संबंधित धारक/कों के नाम में एक सस्मान और वेंसा ही खाता खोलेंगा जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्दिष्ट तथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपबन्ध अनुपातिक शेषर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अधिम ओ आसानी से वसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या डूबंत हैं या जिनकी वसूली शंकास्पद है, कोई अन्य आस्तियां या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रकम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपबन्धों के लिए अपेक्षित है, अपवादित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 19 अगस्त 1989 के अधिरक्षण आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के आधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 19 अगस्त, 1989 की कारोबार की समाप्ति को ये उसके पश्चात और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी विसंदाय की संगणना इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मदों की जाएगी और तत्पश्चात् जमा की जाने वाली रकम अनुपातिक शेषर होगी जिसमें ऐसे संदाय की रकम कम कर दी जाएगी।

परन्तु यह और कि जहां अन्तरिती बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेह है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उस लेख में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर सकेगा जब

तक कि अन्तरिती बैंक ऐसे खाते में सही प्रतिशेष अभिलिखित नहीं कर कर लेता है।

स्पष्टीकरण:—

“अनुपातिक” पद से, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसे संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर बकाया देय है। विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय ब्याज राशि और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यत्र आता है, से ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो संदाय या वितरण के समय बकाया देय है।

(ग) ऊपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात अन्तरिती बैंक संभवतः कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्येक गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अध्याम स्थापित निक्षेप बीमा और प्रत्येक गारंटी नियम का (जिसमें इसमें इसके पश्चात निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको रकम प्राप्त होती है, सतत दिन के अन्दर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु:—

(i) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अन्तरिती बैंक द्वारा नकद रूप से किया जायेगा।

(ii) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आसानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबन्ध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैंक को किसी रकम का संदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के अन्तरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की बाबत संदाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।

(घ) विहित तारीख को अन्तरिती बैंक को समावृत्त पुंजी सम्पूर्ण रकम और रक्षितों को डूबंत और शंकास्पद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जाएगा और अन्तरक बैंक की अन्य आस्तियों में अवधारण और अन्तरक बैंक के सदस्यों के अधिकार अन्तरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबन्धित हैं।

6. निम्नलिखित की बाबत:—

(क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेख की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख यदि कोई है, में जमा न किया गया अनिर्णय और

(ख) अन्तरक बैंक में प्रत्येक शेषर को बाबत जिसकी रकम को विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेषर धारका के द्वारा या उसकी ओर से शेषर पुंजी के भंडे समावृत्त रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अन्तरिती बैंक द्वारा की

गयी मांग के भूँ रेकम संवर्ध की गयी थी, संग्रहण खाते के रूप में माना जाएगा और उसे अंतरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विवरण संदाय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात् :-

- (1) (क) अंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक में आस्थानित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्दर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाएँ ऐसे शेयर या शेयरों और बकाया मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंदत रह रही अनागत रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्पश्चात् यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक के साधारण शेयरधारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अन्दर ऐसे शेयर या शेयरों या बकाया मांगों यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंदत रह रही अनागत रकम का संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।
- (ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिगत की कालावधि के लिए छः प्रतिशत वार्षिक व्याज सहित खण्ड (क) के अधीन देय रकम के संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेगा।
- (2) अंतरिती बैंक अधिमो, न्यय या मितिक्रिया किए गए सक्तान हूडियों, बही ऋणों और विविध ऋणों तथा अन्य आस्तियों की बाबत जो "ऐसे अधिमो के रूप में जो आनामी से बमूली योग्य नहीं है और या बमूली के लिए बूकन या शंकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है : या जो ऊपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः बमूली योग्य हैं या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवर्तित कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाहियाँ करेगा परन्तु यह और किसी ऋण या आस्ति की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो अंतरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना :
 - (क) ऋण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बटु खाने में नहीं डालेगा।
 - (ख) उसे अंतरिती किन्हीं प्रतिभूतियों का या उनके द्वारा जो गयी किसी आस्ति का विक्रय या अवयवा व्यवस नहीं करेगा।
- (3) इसके अतिरिक्त, अंतरिती बैंक, बैंक की विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ज के साथ और कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ठ के अधीन अंतरिती बैंक के किसी संप्रवर्तक निदेशक, प्रबन्धक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा तत्कालीन के रूप में अधिमोर्णित की गयी रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियाँ करेगा।
- (4) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) और (4) में उल्लिखित सबों के कारण धाने द्वारा की गयी बमूलियों में से किसी समाश्रित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूँ अनुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समर्थित हो या अस्पातिक, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निबंधनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को

या उसके पश्चात् उद्भूत हुआ है या जिसका पैसा खला है, संदाय करेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 45क के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अधिपति हो, उपबन्ध कर सकेगा।

- (5) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखित सबों के कारण धाने द्वारा की गयी बमूलियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्य व्ययों की जो उचित समझा जाए, उनमें से कटौती करने और उपर्युक्त खण्ड (4) के निबंधनों के अनुसार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चात् या ऐसे अतिशेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्वों की सीमा अंतिम रूप से अधिमोर्णित की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित सम अति दायित्वों की बाबत उपबन्ध में से उपलब्ध हो।
- (क) निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अंतरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबन्धित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और
- (ख) ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में, जिन्होंने बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपबन्धित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबन्धित संदाय की बाबत निगम को उक्त खाते से शोध रकमों को उपर्युक्त उपखण्ड (क) के उपबन्धों के अनुसार पहले संदाय किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण खाते में उन्हें शोध अतिशेष यदि कोई हों, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अंतरिती बैंक की बहियों में उपबन्धित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संदाय की जाएगी। परन्तु यह और कि अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उस वष में करेगा :-

- (1) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तत्कालीन या समरूप खाते को बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परियक्ष्य नहीं हुआ है
- (2) यदि उक्त खाते को बाब कर दिया गया है या वह सकल भुगतान के लिए परियक्ष्य हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निबंधनों के अनुसार निगम को शोध रकमों, और उस खण्ड के उपखण्ड (ख) के निबंधनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में शोध रकमों की श्रेणी आ प्रपस में समान होगी, और यदि उक्त, संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान अनुपात में कमी होगी।
- (7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या यूँतः उपबन्धित किए जाने के पश्चात् अंतरिती बैंक, खण्ड (5) में निर्दिष्ट रकमों के उस अतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अंतरक बैंक के भूतपूर्व शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी रीति से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा :-

- (क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व अधिमान शेयरधारकों के खाते में शोध रकम, यदि कोई हो,

(ख) विनियम: सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो और उसके पश्चात् ।

(ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व आस्थापित शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

(घ) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः संवत् गकरने के पश्चात् अंतरितों बैंक के पास बाकी बचे अधिशेष का अंतरक बैंक का भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा ।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता कि उपर्युक्त किसी उपखण्ड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा ।

(8) इस पैरा में निदिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अंतरितों बैंक का दायित्व उस सीमा तक सम्भ्रा जाएगा, जो इस स्कीम में उपबंधित है ।

(9) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर अवधि से जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात्, प्रयोजन के लिए विनिदिष्ट करे, आरम्भ वर्ष के अवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निदिष्ट किसी ऐसी मद का, जो उस तारीख तक बचल नहीं की जा सकता हो, मूल्यांकन अंतरितों बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से किया जाएगा और अंतरितों बैंक, उक्त मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खण्ड (4) में निदिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि को जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) और (7) में उपबंधित क्रम और रीति से उस तारीख तक चुकाई जाने से रह गई हो, पहले उनमें से कटौती करके वितरित करेगा ।

(10) अंतरितों बैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखित मदों का कारण वसूल किए गए ऐसे धन को, जिनको सुरक्षित संदाय के लिए उसके द्वारा प्रेषण किए जाने की सम्भावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंक के पास व्याज वसूले निक्षेपों में, ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा, भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिश्चित करेगा । प्रोद्भूत खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निदिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपबंधित रीति से उपयोजित किया जाएगा ।

7. किसी अधिष्ठाता या विवक्षित मंडला में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, पैरा (5) के निबंधों के अनुसार अंतरितों बैंक के पास खाते खोले गए गए खाते को बचल व्याज का संदाय किया जाएगा और उसके केवल उन या अगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी दरों पर जो अंतरितों बैंक अनुपात कर जमा किया जाएगा ।

8. कोई भी निक्षेपकर्ता या अंतरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक की किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंतरितों बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा ।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अंतरितों या अंतरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई बाव या अन्य विधिक कार्य-बाधियाँ नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुसरण में सदभावपूर्वक का गमा है या पाँ को जाने के लिए आशयित है ।

10. अंतरक बैंक के समीप कर्मचारी सेवा में बने रहने और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरितों बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 19 अगस्त, 1989 को कारबार बंद होने से ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं ।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक में ऐसे कर्मचारी जिन्होंने अंतरक बैंक या अंतरितों बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अंतरितों बैंक के कर्मचारियों न होने के अपने आशय के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपबन्धों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हों, और ऐसे पेंशन, उपदान भविष्य निधि और सेवा निवृत्ति फायदे के संदाय के लिए हकदार होंगे, जब 19 अगस्त 1989 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हो ।

परन्तु यह और कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों को बाबत, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अंतरितों बैंक के सारे कर्मचारियों में रूप में नियुक्त किया गया है, अंतरितों बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरितों बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छुट्टी की दशा में इस आधार पर छुट्टी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर नहीं रही है और अंतरितों बैंक में उनके स्थानांतरण से विवक्षित नहीं हुई है ।

11. अंतरितों बैंक, उस तारीख से जिसको इस स्कीम को मंजूर किया जाना है, तीन वर्ष से अनधिक अवधि के अवसान पर, अंतरक बैंक के कर्मचारियों की वही पारिश्रमिक और सेवा के वही विवक्षित और शर्तें संदाय या मंजूर करेगा, जो अंतरितों बैंक के तत्समान रैंक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को, अंतरितों बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अंतरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास ग्रहणाएँ और अनुभव के अधीन रहने हुए, लागू हों ।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी की अर्हताएँ या अनुभव अंतरितों बैंक के तत्समान रैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों को ग्रहणाएँ और अनुभव के समान या समतुल्य है या नहीं या वह अंतरितों बैंक के तत्समान में कर्मचारियों का वेतन नियत करने के लिए अपनाए जाने वाले सिद्धांतों को प्रक्रिया के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निदिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा ।

12. व्यापस्थिति, अंतरक बैंक या अंतरितों बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि / और या उपदान निधि को न्यासी या प्रशासक, विहित तारीख को या उसके पश्चात् यथासंभव शीघ्र, अंतरितों बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और / या उपदान निधि के न्यासी को, या अन्यथा, जैसा अंतरितों बैंक निदेश दे, अंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए न्यास में धारित सब धन और विनिधान अंतरितों बैंक कर देगे ।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्कर्तव्य न्यासी, विनिधानों के मूल्य में किसी कमी के लिए या विहित, तारीख के पहले किए गए किसी कार्य, उपधा, या व्यक्तिजम बर्तित दायी नहीं होंगे ।

13. अंतरितों बैंक, ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में समय-समय पर प्रेषण करे ।

14. अंतरितों बैंक, अंतरक बैंक के कार्यमालप का विवरण ऐसे प्रापक में और ऐसे कालिक अंतरावों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिदिष्ट करे, अंतरक बैंक के शेयरधारकों

को भेजेगा। ऐसे विवरणों न भेजा जाना सब रोकना के लिये आरक्षण बैंक ऐसा निर्देश दे।

15. किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी अंतर्निष्ठी बैंक द्वारा दी जाने की प्रतीक्षा की जाती है, उस वृत्ति में यह समझा जाएगा कि उसे सम्बन्ध स्वरूप में दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत पते पर, जब तक कि कोई नया पता अंतर्निष्ठी बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत न हो, प्रेषित की सम्बोधित किया गया है और उसे पूर्व-उद्धृत गामना डाक से भेज दिया गया है, और ऐसा सूचना उसे डाक में डाले जाने के पश्चात्/प्रवृत्तलीय घण्टे के अन्तराल पर तारीख का यदि समझी जायेगी इसके अतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसूचना की, जो सार्वजनिक हित की हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिसका परिचालन ऐसे स्थानों पर हो जहाँ बैंक खाताधारक संगठन कर रखा या, विज्ञापित किया जाएगा।

16. यदि इस स्कीम के किन्हीं उद्देश्यों या निर्वहन करने समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निश्चित किया जाएगा और उसकी रूप निश्चयक होगी और अंतर्निष्ठी बैंक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निवेशकों और और अन्य लेनदारों तथा कर्तव्यियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर, जिसका इन बैंकों में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दायित्व है, व्यवहार होगा।

17. यदि इस स्कीम के उद्देश्यों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अंतरक और अंतर्निष्ठी बैंकों को या उनमें से किसी को, ऐसे निर्देश, जो इस स्कीम से अलग न हो, जारी कर सकती, जो केन्द्रीय सरकार को भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई दूर करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

[सं. 17/7/89 बी.प्रो.-III (i) (261)]

S.O. 153(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Parur Central Bank Ltd., North Parur shall be the transferor bank and the Bank of India shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside Indian the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf realise any assets or discharge any

liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

(4) (I) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely.

(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered

reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

(II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

(III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee

bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely :—

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION :

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION :

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act :

Provided that —

(i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;

(ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below :—

(6) In respect of

(A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

(B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely:

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled

to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any ;

(b) The transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default,

(ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date ;

(v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of

clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

(a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and

(b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

(i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and

(ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments prorata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

(a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

- (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made and thereafter;
- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed *pro rata* among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount of amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise, as the

transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.

(17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17/7/89-B.O.III(i)(6)]

का.प्र. 154(प्र):—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के प्रभुत्व में बैंक आफ तमिलनाडु लि., तिरुनलवेली के इंडियन ओवरसीज बैंक के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उक्त उपधारा के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी, 1990 को विहित तारीख के रूप में विनिश्चित करती है।

[संख्या 17/7/89-बैं.प्र. III (iii)(i)]

S.O 154(E)—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the

20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli with Indian Overseas Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17/7/89-BO. III (iii)(a)]

का.प्र. 155(प्र):—केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आदेश पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन बैंक आफ तमिलनाडु लिमिटेड, तिरुनलवेली के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिसूचना प्रकाश किया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इंडियन ओवरसीज बैंक के साथ बैंक आफ तमिलनाडु लिमिटेड, तिरुनलवेली के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) की उपबंधों के अनुसार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों की भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की वास्तव प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् वह स्कीम उपांतरित की है और इसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

अब धन: केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें आगे वर्णित निबंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए इस स्कीम की मंजूरी दे दी है।

(1) बैंक आफ तमिलनाडु लिमिटेड, तिरुनलवेली अंतरक बैंक होगा और इंडियन ओवरसीज बैंक अंतरित बैंक होगा।

(2) ऐसी तारीख से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिश्चित करे (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अंतरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियाँ, मांग, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, प्राप्ति और जंगम और स्थावर सम्पत्ति जिसके अंतर्गत भू-भूति के सभी आयतनों या पट्टों या करारों द्वारा प्राप्त और उनमें अंतर्विष्ट/भाटकों और अन्य धनराशियों और प्रसंग-विधाओं के अधीन परिसर, जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय कर्मचारी, विधायित उपकरण, संयंत्र, यंत्र और तंत्र, बहो, कागज-पत्र लेखन सामग्री स्टॉक, अन्य स्टॉक और समान, सभी स्टॉक विनिधान गेयर और प्रतिभूतियाँ, हाथ में और अभिवृद्ध में प्राप्त सभी ढुंजियाँ, सभी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अंतर्गत मांग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), बुलियन, सभी वर्तमान ऋण, बंधक, ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभूति अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हो, सम्पत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के प्राप्ति संबंधी फायदे इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतरित बैंक को अंतरित हो जायेंगे और उसकी सम्पत्ति और प्राप्ति बन जायेंगे और विहित तारीख से ही अंतरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति में अंतरित बैंक के दायित्व, कर्तव्य और बाध्यताएँ होने और बन जायेंगे।

पूर्वगामी उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएँ, बिलेस, बंधीय, करार मुक्यातारनामे, विविध प्रतिनिधित्व की मंजूरीयों और किसी भी प्रकृति की अन्य लेखतों की विहित तारीख

के ठीक पहले प्राप्तकालीन या प्रभावशाली हों, अंतरिती बैंक के विपक्ष या उसके पक्ष में इसमें उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होगी और जैसे ही कार्यान्वित की जा सकेंगी मासो अंतरक बैंक के ध्यान पर अंतरिती बैंक उसमें पक्षकार रहूँगी, मासो के अंतरिती बैंकों के पक्षों में जारी की गयी हों।

यदि विहित तारीख को अंतरक बैंक द्वारा या उसके विपक्ष कोई बाध, प्रपील या कित्ता भी प्रवृत्ति की कोई अन्य विधिक कार्यवाही संबंधित है तो उसका उपशमन नहीं होगा वह बंद नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के प्रथम उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतरिती बैंक के द्वारा या उसके विपक्ष जारी रखी जा सकेंगी और प्रवृत्ति की जा सकेगा।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबंध उस देश में स्थित किसी ऐसी प्राप्ति या दायित्व को जो अंतरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अंतरिती बैंक को अंतरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी प्राप्ति या दायित्व के संबंध में अंतरक बैंक का कार्यपालक विहित तारीख से अंतरिती बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यपालक अधिकारी में स्थित हो जाएगा और वह कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी व्यक्तियों का प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रभावी रूप से इसके कार्यपालक के परिसमापन के प्रयोजन के लिए अंतरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अंतरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहियाँ करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश का विधियाँ द्वारा अपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा नियुक्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अंतरक बैंक की प्राप्ति या वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध भागों का अंतरिती बैंक को अंतरित कर देगा।

3. अंतरक बैंक की बहियाँ बंद की जाएंगी और उनकी तुलना की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा और तुलन-पत्र कार्टर्ड लेखाकार तथा कार्टर्ड लेखाकारों का किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट की गयी हों संपरीक्षित और प्रमाणित कराए जायेंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गयी अंतरक बैंक के तुलन-पत्र की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव शीघ्र कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अंतरक बैंक से तुलन-पत्र या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सशस्त्रों के समक्ष प्रस्तुत करी या उसकी प्रतियाँ कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलन-पत्र और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन बुलाने की धमिका नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अंतरक बैंक के निवेशक बोर्ड के लिए उस अधिनियम की धारा 283 की अपेक्षाानुसार अधिवेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

4.(1) अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार अंतरक बैंक की सम्पत्तियों और प्राप्ति का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, अर्थात् :-

(क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विभिन्नताओं का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार में बरों पर किया जाएगा।

(ख) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा

24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी अधिसूचना में अधिकृत सिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।

(i) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाकघर-प्रमाण-पत्र, ट्रेजरी बचन निधम प्रमाण-पत्र और केन्द्रीय सरकार की खपू बचत योजना के अधीन जारी की गयी कोई अन्य प्रतिभूतियाँ या प्रमाण-पत्र का मूल्यांकन उनके अंतिम मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को नकद प्राप्त मूल्य के आधार पर इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया जायेगा।

(iii) जहाँ किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमींदारी उम्पलन अधिनियम या अन्य सामान्य प्रतिभूति जिसकी बाबत मूल किस्मों में देश है, का बाजार मूल्य अभिविहित नहीं किया जा सकता है या किसी कारण-वश यह माना जाता है कि वह उम्पल उचित मूल्य प्रदर्शित नहीं करता है यह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उक्त रकम पर किया जायेगा जो संदेन किए जाने वाले वकाया मूल्य और उक्त ध्याज को किस्मों को उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्में देय हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिसने प्रतिभूति का संबंध है और जिसकी वैधता हो या सम्पन्न बनी हो परिलक्ष्य है या वह पुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समझा जाता है।

(ग) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर डिबेंचर, वंध-पत्र या अन्य विभिन्नता का बाजार मूल्य उसके प्रसामान्य भावों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं माना जाता वहाँ विभिन्नता का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके औसत बाजार मूल्य के आधार पर किया जायेगा।

(घ) जहाँ किसी प्रतिभूति, शेयर या डिबेंचर या अन्य विभिन्नता का बाजार मूल्य अभिविहित नहीं किया जा सकता है, वहाँ जारी करने वाले समस्थान की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संदेन पावों और अन्य पुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।

(ङ) दावों की वृद्धि के लिए अर्जित परिसरों और अन्य सभी जंगम सम्पत्तियों और किन्हीं प्राप्ति का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जायेगा।

(च) फर्नीचर और पिक्चर, स्टॉक की लेखन सामग्री और अन्य प्राप्ति, यदि कोई हों का मूल्यांकन प्रति बही अधिकृत मूल्य के आधार पर या वसूली योग्य मूल्य के आधार पर जो भी युक्तियुक्त समझा जाए, किया जायेगा।

(छ) अधिमों, जिनके अंतर्गत क्रय की गयी और भित्तिपट्टे पर भुगतान की गयी कृदियाँ भी हैं, बही ऋणों और विधि प्राप्ति का समीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जायेगी और प्रतिभूतियाँ जिनके अंतर्गत उनके आवरक के रूप में धारित प्रतिभूतियाँ भी हैं, अंतरिती बैंक द्वारा परीक्षित और सम्यापित हो जायेंगी। तत्पश्चात् अधिम

जिनके अंतर्गत इनके नाम भी हैं जो निम्नलिखित में वर्गीकृत किए जायेंगे, अर्थात् "वे अधिम जिनमें प्रच्छा और आसानी से बसूली योग्य माना गया है और" "वे अधिम, जिनमें आसानी से बसूली योग्य नहीं माना गया है" और/या जिनकी बसूली इच्छा या संकास्पद है।

- (i) इस स्कीम प्रयोजनों के लिए दायित्वों के अंतर्गत ऐसी सभी समाहित दायित्व भी हैं, जिनके लिए अन्तरिनी बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के स्रोतों से उचित रूप से पुति करने की आशा या अपेक्षा की जा सकती।
- (ii) जहां किसी आस्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को आधारित नहीं किया जा सकता है, वहां वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से भागतः या पूर्णतः किसी पश्चातवर्ती तारीख को बसूली योग्य आस्ति के रूप में जाना जायेगा।

किसी आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अधिम के वर्गीकरण और या किसी दायित्व के अवधारण की वास्तविक अन्तरिनी बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई असमझमति है, तो यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निदेशित किया जाएगा जिसकी राय अंतिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तरिनी बैंक द्वारा मदों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अन्तरिम रूप से प्रयोज्य जायेगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो यह आस्ति को ऐसी किसी मद के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसी किसी मद के अवधारण के संबंध में समुचित समझे और ऐसी राय अधिप्राप्त करने का व्यव अन्तर बैंक को आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण दोनों बैंकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर बाधक होगा।

5. अन्तर बैंक की समाप्ति और आस्तियों के अन्तरिनी बैंक को अन्तरण होने के प्रतिकूल स्वरूप अन्तरिनी बैंक इसे और निम्नलिखित खण्डों में वर्णित विचार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निर्वहन करेगा, अर्थात् :-

- (क) विहित तारीख तक कर्मचारीबन्ध प्रतिभूति निक्षेपों सहित उस पर शोधभूत ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गयी कोई धनराशि और विहित तारीख को सभी अन्य बाधा दायित्व, जिसके अंतर्गत निक्षेप नहीं हैं, संदत्त किए जायेंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जायेगी।

स्पष्टीकरण :

इस परा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निक्षेप पर देय ब्याज संवद्ध निक्षेप का भाग माना जायेगा।

- (ख) प्रत्येक वचन बैंक खाते या चालू खाते या किसी अन्य निक्षेप की बाबत जिनके अंतर्गत सावधि निक्षेप, नकद प्रमाण-पत्र, मासिक निक्षेप, मास या संक्षिप्त भुजना पर देय निक्षेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निक्षेप चाहें वे किसी भी नाम से जाने जाते हों और कोई अन्य खाते जो खण्ड 'क' के अंतर्गत नहीं आते हैं जिसके अंतर्गत इस स्कीम के अधीन देय मोटा नकद ब्याज भी है। अन्तरिनी बैंक विहित तारीख को संबंधित धारकों

के भाग में एक तत्परा और वैसा ही खाता खोलेंगे जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निदिष्ट तथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाते के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अधिम जो आसानी से बसूली योग्य नहीं माने गए हैं, या इच्छा हैं या जिनकी बसूली संकास्पद है, कोई अन्य आस्ति या आस्ति के भाग जो विहित तारीख को मूल्यांकित नहीं हैं और अन्य रकम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संशय या उपबंधों के लिए अपेक्षित है, प्रयोज्य किए जायेंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 19 अगस्त 1989 के अधिस्थगत आदेश के पैरा 2 के खण्ड (क) (1) के आधार पर किए गए संशयों की संकल्पित रकम आयेगा।

परन्तु 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विहित तारीख के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संशय की संगणना इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के पूर्व की जाएगी और तदनुसार जमा की जाने वाली रकम आनुपातिक शेयर होगी जिसमें ऐसे संशय की रकम कम कर दी जाएगी।

परन्तु यह और कि जहां अन्तरिनी बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेह है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उस खाते में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरिनी बैंक ऐसे खाते में सही प्रतिशेष अभिलिखित नहीं कर लेता है।

स्पष्टीकरण :

"आनुपातिक" पद से, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर बकाया देय है (विहित तारीख के ठीक पूर्व-वर्ती तारीख तक देय ब्याज सहित) और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यतः आता है, से ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो संशय या वितरण के समय बकाया देय है।

- (ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तरिनी बैंक संभवतः कम से कम विलम्ब से किन्तु विहित तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्येक गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निक्षेप बीमा और प्रत्येक गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की श्रेणियों का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निदिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरिनी बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसकी रकम प्राप्त होती है, सात दिन के अंदर उस खाते में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खण्ड (ख) में निदिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा परन्तु :-

- (i) यदि खण्ड (ख) में निदिष्ट कोई खाता बंद कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संशय अन्तरिनी बैंक द्वारा नकद रूप से दिया जायेगा।

- (ii) यदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका शासनी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबंध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका प्रत्येक रूप से लेखा विवरण जाएगा तथा अंतरिती बैंक को किसी रकम का संवाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति भिम नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के अंतरिती बैंक के माध्यम से या व्यक्ति की बाबत संवाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है।
- (घ) विहित तारीख को अंतरिती बैंक की समादत्त पूर्वी सम्पूर्ण रकम और आरक्षिती को वृद्ध और महास्वयं ऋण के लिए उपबंध के रूप में माना जाएगा और अंतरक बैंक की अन्य प्राप्तियों में अवलक्षण और अंतरण बैंक के मद्यों के अधिकार अंतरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबंधित हैं।

6. निम्नलिखित की बाबत :-

- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक लेखे, की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के आधार पर किसी निश्चय, यदि कोई हो, में जमा न किया गया अनिशेष ; और
- (ख) अंतरक बैंक में प्रत्येक शेयर की बाबत जिसकी रकम को विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूर्ण के मद्दे समादत्त रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अंतरिती बैंक द्वारा की गयी मांग के मद्दे रकम संवत्त की गयी थी, संग्रहण लेखे के रूप में माना जाएगा और उसे अंतरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विरुद्ध संवाय निम्नलिखित रीति में किया जाएगा, अर्थात् :-
- (1) (क) अंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक में प्राप्तित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के अन्तर जो विनिर्दिष्ट की जाएं जाएं, ऐसे शेयर या शेयरों और बकाया मांगों, यथा कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंवत्त रह रही अनाहत रकम का संवाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्पश्चात् यदि यह अवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक के माध्यम शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत किए जाने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिर्दिष्ट की जाए तीन मास के अंदर ऐसे शेयर या शेयरों या बकाया मांगों, यदि कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असंवत्त रह रही अनाहत रकम का संवाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।
- (ख) अंतरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिगत की कालावधि के लिए छः प्रतिशत वार्षिक व्याज हित खण्ड (क) के अधीन देय रकम के संवाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेगा।
- (2) अंतरिती बैंक अधिमों, क्रय या मितहाटा किए गए भुगतान, हुडियों, बही, ऋणों और विविध ऋणों तथा अन्य प्राप्तियों की बाबत जो "ऐसे अधिमों के रूप में जो आसानी से बसूली योग्य नहीं है और या बसूली के लिए बूझ या शाकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है : या जो अवर के पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात

पूर्णतः या भागतः बसूली योग्य है या हो सकते हैं, के सम्बन्ध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संवाय की मांग और से प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और किसी ऋण या आस्ति की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो अंतरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक को अनुमोदन के बिना :

- (क) ऋण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहारा नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बढ़े खाने में नहीं डालेगा।
- (ख) उसे अंतरिती बैंक की प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा की गयी किसी आस्ति का विक्रय या अन्यथा व्ययन नहीं करेगा।
- (3) इसके अतिरिक्त, अंतरिती बैंक, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45 ज के साथ और कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 455 के अधीन अंतरिती बैंक के किसी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिर्णीत की गयी रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका संवाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा।
- (4) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1) (2) और (3) में उल्लिखित मदों के कारण अपने द्वारा की गयी बसूलियों में किसी से समाश्रित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समाश्रित या अत्याधिक, की बाबत जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निबंधों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को या उसके पश्चात् उद्भूत हुआ है या जिनका पता चला है, संवाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 45क के अधीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपर्याप्त हो, उपबन्ध कर सकेगा।
- (5) अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखित मदों के कारण अपने द्वारा की गयी बसूलियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्य व्ययों की जो उचित समझा जाए, उनमें से कटौती करने और उपर्युक्त खण्ड (4) के निबंधों के अनुसार उनमें से रकम वितरित करने के पश्चात या ऐसे अनिशेष, यदि कोई हों, में से जो ऐसे दायित्वों की सीमा अंतिम रूप में अधिनिर्धारित की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाश्रित दायित्वों की बाबत उपबन्ध में से उपलब्ध हो।

(क) निवेश सीमा और प्रत्येक गारंटी निगम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अंतरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबंधित रकम, यदि कोई हो, का संवाय करेगा, और

(ख) ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संग्रहण खाते की बाबत शोध रकमों का, और ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में जिनकी बाबत अंतरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपबंधित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित संवाय की बाबत निगम को उक्त खाते से शोध रकमों की उपर्युक्त उपखण्ड (क) के

उपबन्धों के अनुसार पहले संवत् किए जाने के पश्चात् उनके ग्रहण खाते में उन्हें शोध्य ग्रन्थिष यदि कोई हो, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अंतरिती बैंक को बहिर्षी में उपबंधित की जाएगी तथा निषेध सीमा और प्रत्यय गारंटी निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट रीति से निगम को संवत् की जाएगी। परन्तु यह और कि अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उस दशा में करेगा :-

(1) यदि पैरा (5) के खण्ड (ख) में उल्लिखित तत्समन या समरूप खाते को बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्व नहीं हुआ है, और

(2) यदि उस खाते को बन्द कर दिया गया है या वह नकद भुगतान के लिए परिपक्व हो गया है।

(6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निबन्धों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों, और उस खण्ड के उपखण्ड (ख) के निबंधनों के अनुसार निषेधकताओं के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी आपस में समान होगी, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान अनुपात में कमी होगी।

(7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबंधित किए जाने के पश्चात् अंतरिती बैंक, खण्ड (5) में निर्दिष्ट रकमों के उस अतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अंतरक बैंक के भूतपूर्व गेयर धारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु एक रीति से और उस सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा,

(क) प्रथमतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व अधिमान गेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

(ख) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य गेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो और उसके पश्चात्।

(ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के भूतपूर्व आस्थायित गेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

(घ) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः संवत् करने के पश्चात् अंतरिती बैंक के पास बाकी बचे अधिशेष का अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य गेयरधारकों के बीच अनुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखण्ड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर बिनिश्चय अंतिम होगा।

(8) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के बारे में केवल अंतरिती बैंक का दायित्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है।

(9) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर अवधि से, जो केन्द्रीय सरकार भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, बारह वर्ष के अवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निर्दिष्ट किसी ऐसी सब का, जो उस तारीख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन अंतरिती बैंक, द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक को परामर्श से किया जाएगा और अंतरिती बैंक उक्त मूल्यांकन का ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खण्ड (4) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी रीति की जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) और (7) में उपबंधित क्रम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गयी हो, पढ़ने से उनमें कटौती करके वितरित करेगा।

(10) अंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखित सर्वों के कारण वसूल किए गए ऐसे धन की, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा किए जाने की संभावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास ब्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति से और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिर्दिष्ट करेगा। प्रोदूम ब्याज को खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपदर्शन रीति से उपयोग किया जाएगा।

7. किसी अधिष्यक्त या विवक्षित मंजिदा में किसी प्रतिकूल बात के होने हुए भी, पैरा (5) के निबंधनों के प्रामाण्य अंतरिती बैंक के पास खोले गए गए खाते की बाबत ब्याज का संदाय किया जाएगा और उसके केवल उन या अपने उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के अनुसार ऐसी दरों पर, जो अंतरिती बैंक अनुमान करे जमा किया जाएगा।

8. कोई भी निषेधकता या अंतरक बैंक या अन्य लेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के निवाह, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अंतरिती या अंतरक बैंक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई दाव या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुकरण में सम्भाव्य की गयी है या की जाने के लिए आशयित है।

10. अंतरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिती बैंक द्वारा उभी परिश्रमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 19 अगस्त, 1989 का कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसी कर्मचारियों का लागू थी।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मचारी जिन्होंने अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक को, उस तारीख के, जिसकी यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक अगामी एक मास के अवसान के पूर्व किसी भी समय अंतरिती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आग्रह के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपबंधों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि कोई हों, और ऐसे पेंशन, उपदान, भविष्य निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के लिए हकदार होंगे, जो 19 अगस्त, 1989 का कारबार के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुभव हो।

परन्तु यह और कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों की बाबत। जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अंतरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अंतरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरिती बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छुट्टी की दशा में इस आधार पर छुट्टी प्रतिकर के संदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है और अंतरिती बैंक में उनके स्थानांतरण से विच्छिन्न नहीं हुई है।

11. अंतरिती बैंक, उस तारीख से जिसकी इस स्कीम को मंजूर किया जाना है, तीन वर्ष से अतिरिक्त अवधि के अवसान पर अंतरक बैंक के कर्मचारियों की वहां पारिश्रमिक और सेवा के यहाँ निबंधन और शर्तों संदाय या मंजूर करेगा, जो अंतरिती बैंक के तत्समान रैंक या प्रास्थिति के कर्मचारियों की, अंतरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों की समान या समरूप अंतरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अर्हताएं और अनुभव के अधीन रहते हुए, लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई शंका या मतभेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी की अर्हताएं या अनुभव अंतरिती बैंक के तत्समान रैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव के समान या समरूप है या नहीं या वह अंतरिती बैंक के वेतनमान में कर्मचारियों का वेतन नियत करने के लिए अपनाए जाने वाले सिद्धांतों की प्रक्रिया

के संबंध में है, तो शंका या मतभेद की भारतीय रिजर्व बैंक को निविष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

12. यथास्थिति, अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के स्थायी या प्रशासक, विहित तारीख की या उसके पश्चात् यथासंभव शीघ्र, अंतरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के स्थायी की, या अन्यथा, जैसा अंतरिती बैंक निदेश दे, अंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए, व्यास में धारित सब धन और विविध-अंतरित कर वेगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्तुर्हीन स्थायी, विविधियों के मूल्य में किसी कर्मी के लिए, या विहित तारीख के पहले किए गए किसी कार्य, उपेक्षा या व्यक्तिक्रम की बाबत दावा नहीं होगी।

13. अंतरिती बैंक ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करें।

14. अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे प्राकृष में और ऐसे कालिक अंतरालों पर जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करें, अंतरक बैंक के गेयरधारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निदेश दे।

15. किसी ऐसी सूचना या अन्य संसुचना के बारे में, जिसकी अंतरिती बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस वक्ता में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक् रूप से दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत पते पर, जब तक कि कोई नया पता अंतरिती बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकृत न हो, प्रेषित की संबंधित किया गया है और उसे पूर्व-संकेत समाचार डाक से भेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे डाक में डाले जाने के पश्चात् अज्ञानान्तर चण्डे के अधिनान पर तामील की गयी समझा जाएगा। इसके अतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसुचना को, जो सार्वजनिक हित को हानि, एक या अधिक नैतिक समाचार पत्रों में, जिनका परिचालन ऐसे स्थानों पर है जहाँ बैंक अपने कारबार का व्यवहार कर रहा था, बिना विना किया जाएगा।

16. यदि इस स्कीम के किसी उपबंध या निर्बंधन करने समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले की भारतीय रिजर्व बैंक को निविष्ट किया जाएगा और उसकी राय निष्ठायाक होगी और अंतरिती बैंक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, निष्पेक्षताओं और अन्य सेनधारियों तथा कर्मचारियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति पर, जिसका इन बैंकों में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दाविस्व है, आबद्धकर होगी।

17. यदि इस स्कीम के उपबंधों की प्रवर्तन करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अंतरक और अंतरिती बैंकों की या उनमें से किसी को, ऐसे निदेश, जो इस स्कीम से अंगित न हो, जारी कर सकेंगी, जो केन्द्रीय सरकार की भारतीय रिजर्व बैंक से परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई दूर करने के उपाय के लिए आवश्यक या उपयुक्त प्रतीत हो।

[सं. 17/7-89-बी.ओ.-III(iii) का]
मन्त्रेश्वर झा, संयुक्त सचिव

S.O. 155(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli, with the Indian Overseas Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli shall be the transferor bank and Indian Overseas Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (1) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issue in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate,

or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall be subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheets and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

(4) (I) The transferee bank shall in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,

(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the

purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

(II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

(III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as on meet realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the

transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION :

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank,

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION :

The term 'pro rata' shall, in so far as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amount remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, in so far as it occurs elsewhere in this scheme mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution.'

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been ascertained, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not after three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sum due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act :

Provided that—

(i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;

(ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below :—

(6) In respect of

(A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and

(B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

(i) (a) The transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

(b) The transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000 the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;

(v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

(b) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and

(b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
 - (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :
- (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter.
 - (c) in the third place, the amounts, if any due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light

of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraph and at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employee are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.

(17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17/7/89-B.O.I./II(iii)(6)]

MANTRESHWAR JHA, Jt. Secy.